प्याला थामे एक बालक

गुरुमाई चिद्विलासानन्द द्वारा पुनःकथित

सदियों पहले, एक सुबह, एक महानुभाव समुद्र के किनारे घूम रहे थे जो आगे चलकर सन्त ऑगस्टीन के नाम से जाने गए। परम सत्य की खोज में वे न जाने कितनी रातों से जागरण कर रहे थे—विचारों से घिरे, अध्ययन में डूबे, तर्क-वितर्क में उलझे, प्रार्थना में रत। और इससे भला वे पहुँचे कहाँ थे? उन्होंने प्राप्ति क्या की थी? उनकी पलकें भारी थीं। उनके शरीर का जोड़-जोड़ दुख रहा था। काश वे विश्राम कर पाते।

सत्य की खोज में ऑगस्टीन ने अपने मन की सम्पूर्ण शान्ति को खो दिया था। आत्मसाक्षात्कार के पीछे वे इतनी तेज़ी-से दौड़ते रहे थे कि उन्हें अब यह भी पता नहीं था कि दिन है या रात। शास्त्रों पर शास्त्र, शब्द व और अधिक शब्द, तर्क-वितर्क, मत-मतान्तर, विचार-विमर्श, पन्थ-सम्प्रदाय, महानतम और नवीनतम ख़याल—इन सारे सोच-विचारों से उनका सिर इतना भारी हो गया था कि उन्हें लगता था कि वह फट जाएगा। अपने मन के बोझ तले वे इतने दब गए थे कि अक्सर वे एक कुबड़े व्यक्ति की तरह झुके-झुके-से दिखाई पड़ते थे।

उषाकाल में वे सागर और आकाश के विस्तार को निहारते हुए, समुद्र-तट पर चल रहे थे—बस खोज में लगे हुए थे। कुछ समय बाद, उन्होंने एक नन्हे-से बालक को देखा जो बिलकुल अकेला खड़ा था। हाथ में प्याला थामे वह बालक समुद्र को एकटक देख रहा था।

जब ऑगस्टीन समीप आए तो उन्होंने देखा कि वह नन्हा बालक बड़ा दुःखी और लाचार लग रहा था। विचारों में खोया हुआ वह काफ़ी तनहा दिखाई दे रहा था।

ऑगस्टीन इस बालक के प्रति करुणा से द्रवित हो उठे। उसके नज़दीक पहुँचकर उन्होंने कहा, "अरे बेटा, क्या बात है? तुम इतने दुःखी क्यों हो? तुम किस बारे में सोच रहे हो?"

उस बालक ने नज़रें उठाकर सन्त ऑगस्टीन को देखा, उसकी आँखें अनकही मायूसी से भरी थीं। उसने कहा, "मैं यहाँ अपना प्याला लेकर आया था जिससे मैं समस्त सागर को इसमें भर सकूँ। मैं कब से यहाँ हूँ, और मैं बड़ी ज़बर्दस्त कोशिश कर रहा हूँ, पर काम बन ही नहीं रहा। मुझे समझ में नहीं आ रहा कि मैं क्या करूँ। इससे मुझे बहुत दुःख हो रहा है।"

ऑगस्टीन ने बड़े स्नेह से उस बालक के कन्धों पर अपना हाथ रखकर कहा, "तुम बेवजह खुद को इतना दुःखी क्यों कर रहे हो? सागर कितना विशाल है और तुम्हारा प्याला कितना छोटा। सुनो, मेरे पास एक बेहतर युक्ति है। तुम अपना प्याला पानी में क्यों नहीं फेंक देते? तब तुम्हारा प्याला सागर का ही हिस्सा बन जाएगा और तुम्हारी समस्या सुलझ जाएगी।"

उस बालक को यह युक्ति बहुत पसन्द आई। उसके चेहरे पर मुस्कान खिल उठी। नाचती आँखों से उसने अपने प्याले को, सागर में जितनी दूर तक फेंक सकता था, फेंक दिया।

प्याला हवा में उड़कर चमचमाते, बलखाते नीले पानी में ग़ायब हो गया; ऑगस्टीन चकित-से खड़े थे। उनकी आँखें चौड़ी हो गई थीं। उन्होंने खुद अभी-अभी जो शब्द कहे थे, वे उन्हें अपने मन में गूँजते हुए सुनाई दे रहे थे। *अपने प्याले को पानी में फेंक दो।* और उन्हें समझ में आया कि उनकी कशमकश का यही तो जवाब था।

उनका हृदय पुकार-पुकारकर कहने लगा, "ऑगस्टीन! ऑगस्टीन, तुम्हें समझ में आ रहा है न? तुम चिति के सम्पूर्ण सागर को अपने अहम् के एक छोटे-से प्याले में भरने की कोशिश करते रहे हो और रोते रहे हो क्योंकि वह उसमें समाता नहीं। ऑगस्टीन, इसके बजाय अपने अहम् को परम प्रेम के सागर में फेंक दो। जो ज्ञान तुम ढूँढ़ रहे हो, उसके लिए तुम्हारा प्याला बहुत छोटा है। उसे सागर में फेंक दो—ज्ञानसागर में जो मन के परे है—और तब तुम स्वयं ही प्रज्ञान बन जाओगे।"

उनके भीतर जब यह ज्ञान उभरा तो ऑगस्टीन को लगा मानो वे किसी क़ैद से मुक्त हो गए हों। उन्हें इतना हलकापन महसूस हो रहा था कि वे नृत्य करना चाहते थे। उन्हें तो इस बात का भी विश्वास था कि यदि वे चाहें तो वे उड़ भी सकते हैं।

उनके जीवन का भार, इतने वर्षों तक अन्धकार में खोजते रहने का बोझ उतर गया था। और अब, वे जिधर भी मुड़ते, उधर प्रकाश ही प्रकाश था। वह जगमगा रहा था।

ऑगस्टीन को सत्य-दर्शन का प्रसाद मिला था, और उस एक क्षण में उनका रूपान्तरण हो गया था। चलते-चलते, नई समझ की तरंगें उनके अन्दर हिलोरें ले रही थीं—एक के बाद एक तरंगें, उन्हें अधिकाधिक प्रेरित कर रही थीं। इतने समय से, शास्त्रों के गूढ़ शब्दों के अर्थ को समझने की कोशिश में वे अपने चेहरे को किताबों में गड़ाए हुए थे। अब उनका चेहरा ऊपर उठ चुका था। वे संसार के प्रति, भगवान के संसार के प्रति पूरी तरह खुले थे, भगवान के ज्ञान को चारों ओर देख रहे थे। वे रेत के कण-

कण के प्रति अनुराग से ओतप्रोत हो गए थे। सृष्टि का कोना-कोना उनके लिए शास्त्रों का गायन कर रहा था। सृष्टि का कोना-कोना ईश्वर का यशगान कर रहा था।

समुद्र-तट पर चलते हुए ऑगस्टीन ने ग़ौर किया कि वास्तव में, हज़ारों लड़के और लड़कियाँ चिति के सागरतट पर हाथों में प्याले लिए खड़े थे। और हर कोई सोच रहा था, "मेरे पास एक बड़ा प्याला है। इसमें खूब सारा सागर समा जाएगा।" या "मेरा प्याला उस लड़के के प्याले से बड़ा है। इसमें और अधिक सागर समा जाएगा।" "मेरे प्याले की बनावट इतनी बेहतरीन है। यह उस लड़की के प्याले के मुक़ाबले अधिक तेज़ी-से भरेगा।" "मेरा प्याला कितना खूबसूरत है। सागर इसके आकर्षण से बच नहीं पाएगा।" उन सबने अपने अहम् के प्याले कसकर पकड़े हुए थे, वे इन प्यालों पर इतने मोहित थे कि उन्हें छोड़ नहीं पा रहे थे। "मेरा प्याला तीन पीढ़ियों से होता हुआ मेरे पास आया है।" "मेरा प्याला निराला है।" "मेरा प्याला उत्तम है।" वे सब कितने लम्बे समय से इन्तज़ार कर रहे थे। वे सब बड़ी कोशिशें कर रहे थे। पर उनमें से हरेक का प्याला ख़ाली था।

ऑगस्टीन के हृदय ने गुहार लगाई, "हे मेरे प्रियजनो, अपने प्याले को सागर में फेंक दो। खुद को प्रेम में विलीन हो जाने दो। अपने प्याले को सागर में फेंक दो!"

© २०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।